।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

आचार्य महाप्रज्ञ बाल मुनियों को बताएंगे आध्यात्म के रहस्य

श्रीडूँगरगढ़ 29 जनवरी : राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ अब रोजाना बाल मुनियों को आध्यात्म के गूढ़ रहस्यों से अवगत करवायेंगे। कल रात्रि से प्रारभ हुए इस विशेष प्रशिक्षण में आचार्य महाप्रज्ञ ने बाल मुनियों को अहिंसा का सूक्ष्म विवेचन कर समझाते हुए कहा कि केवल कायिक हिंसा से बचना ही अहिंसा नहीं है। हम दूसरे के बारे में बूरा सोचते हैं तो वह भी हिंसा है, इस भाव जगत को चिंतन शैली को बदलने पर पूर्ण अहिंसा फलित होती है। आचार्य महाप्रज्ञ का मानना है कि बाल मुनि संघ का भविष्य है। इनका विकास होने पर और इनमें ज्ञान की गहराई आने पर संघ को नई ऊचाईयां मिलेगी। आचार्य महाप्रज्ञ अब रोजाना रात्रि के 7 बजे से बाल मुनियों को प्रशिक्षण देंगे। इस प्रशिक्षण में आचार्य महाप्रज्ञ आध्यात्म के गूढ़ रहस्यों पर प्रकाश डालने के साथ वृत्तियों के परिष्कार हेतु ध्यान और मंत्र के विशेष प्रयोग भी करवायेंगे। आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा निरंतर अनेक वर्षोंतक ध्यान के प्रयोगों का अन्वेषण कर प्रस्तुत किये गये प्रेक्षाध्यान के द्वारा देशी विदेशी अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर रहें हैं। आचार्य महाप्रज्ञ अब प्रेक्षाध्यान एवं मंत्र के विशेष प्रयोगों का इजात कर मानव के प्रज्ञाजागरण पर विशेष बल दे रहे हैं। वे आने वाले भविष्य में प्रत्येक समस्याओं का समाधान ढूंढ निकालने वाले मानव का निर्माण करना चाहते हैं। इसके लिए बाल मुनियों को विशेष प्रशिक्षण दे रहे हैं।

आत्मा सूर्य के समान आलोक देती है।

तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण में प्रवचन करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने गीता व जैन दर्शन का तुलनात्मक प्रवचन करते हुए कहा आत्मा पूरे शरीर में चैतन्य का प्रकाश उसी प्रकार फैला देती है जैसे सूर्य समस्त लोक को प्रकाशित कर देता है। सूर्य से प्रकाश और तप दोनों प्राप्त होते हैं। जहां सूर्य रहता है वहा अंधकार टिक नहीं सकता।

उन्होनें कहा आत्मा धर्म का मुख्य आधार है आत्मा का त्रैकात्मिक अस्तित्त्व है। आत्मा अमर न हो तो धर्म की उपयोगिता भी कम हो जाती है। साधना का लक्ष्य आत्मा का कल्याण करना है। आत्मा पर आस्था, परलोक की मान्यता, पूनर्जन्म व पूनर्जन्म की अवधारणा ही साधना के पथ पर अग्रसर करती है।

गीताकार ने कहा है आत्मा प्रकाशी तत्त्व है। समस्त शरीर को आलोकित करने वाला है जैन दर्शन में समुद्रघात का प्रकरण माना गया है। उस समय आत्म–प्रदेश सम्पूर्ण लोकाकाश में फैल जाते है। केवल समुद्रघात से सम्पूर्ण लोक आलोकित हो जाता है।

जैन–दर्शन की बारह भावनाओं में अन्यत्व–भावना का यह सिद्धांत है शरीर मे आत्मा है किन्तु आत्मा नहीं है आत्मा भिन्न और शरीर भिन्न सिद्धांत को पुष्ट करती है।

ज्ञान को महासूर्य की उपमा दी गयी है क्योंकि न वह कभी अस्त होता है, न राहु की छाया उस पर पड़तीहै, न बादल उसे ढक पाते है।

क्रमश : 2

उपासक शिविर 1 फरवरी से प्रारंभ

पर्यूषण महापर्व की विशेष आराधना कराने वाले एवं जैन धर्म के प्रचार–प्रसार में अपने आपको नियोजित करने वाले उपासकों का शिविर 1 फरवरी से आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में प्रारंभ होगा। 1 फरवरी से 11 फरवरी तक तेरापंथ भवन में चलने वाले इस शिविर में उपासक का दर्जा पाने के इच्छुक श्रावक–श्राविकाएं संपूर्ण देश से भाग लेने के लिए पहुंचेगें। शिविर की तैयारियों में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के कार्यकर्ता लगे हुए है।

सादर प्रकाशनार्थ : –

मीडिया संयोजक/सहसंयोजक